



National School of Drama
Repertory Company
presents

इस्माइल चुनारा
कृत

लैला मजनून

Laila Majnun
ليلا مجنون

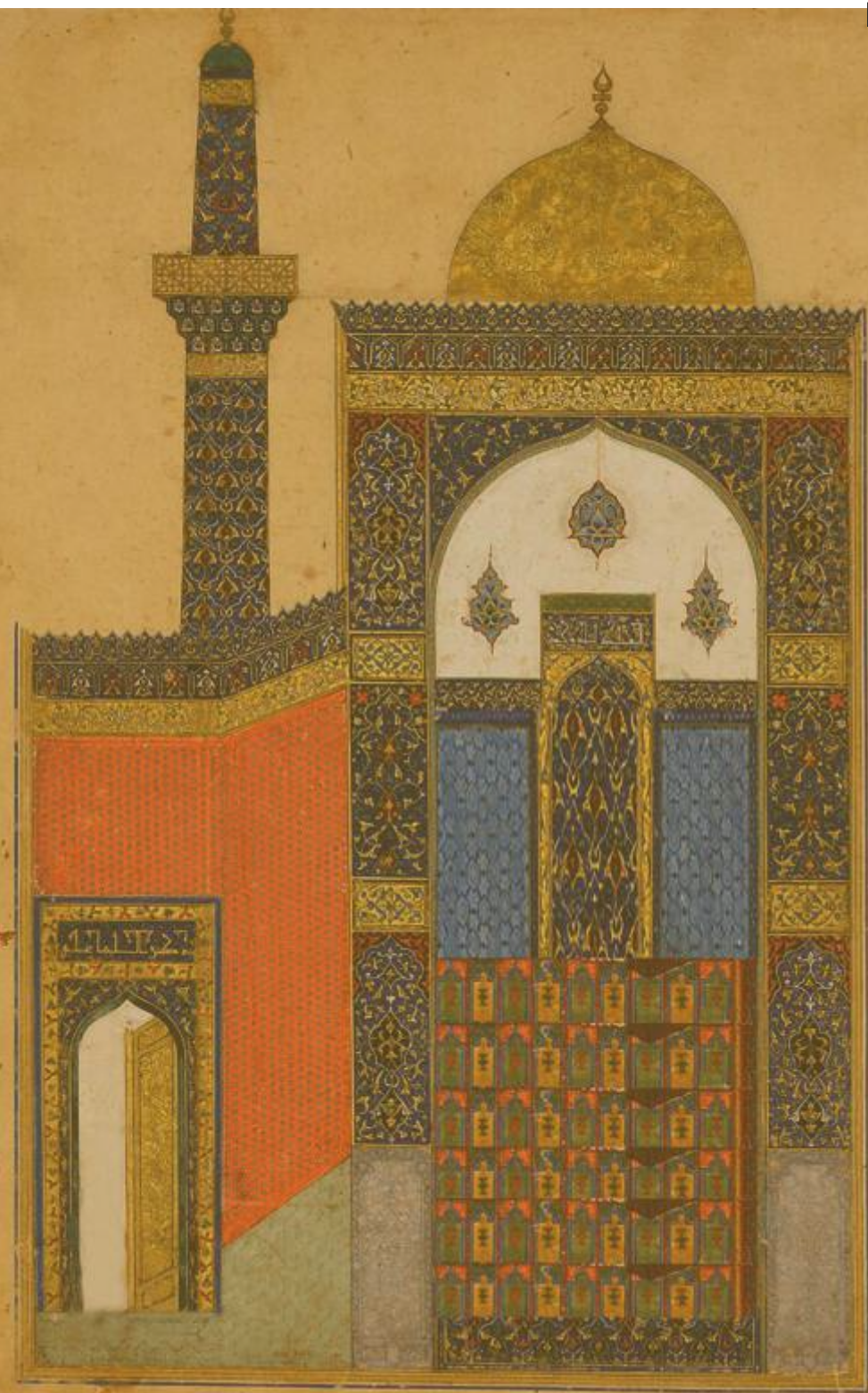
निर्देशन राम गोपाल बजाज

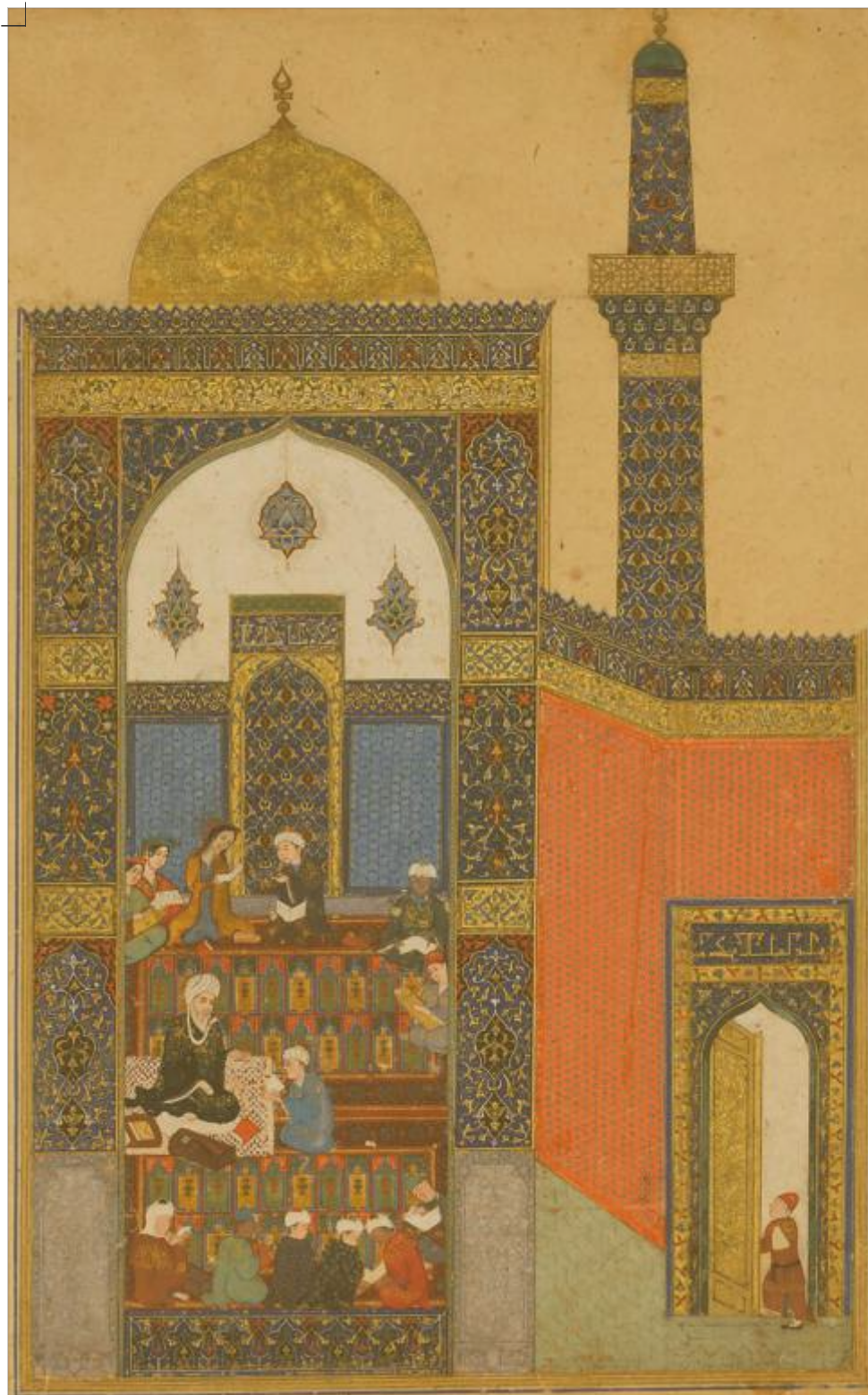


छा रहा है सन्नाटा,
जहाँ कभी लैला गाती थी
वो जगह जहाँ कभी आशिक
अपने महबूब का इन्तज़ार करते थे
आहें भरते थे,

अब यादों की परछाईयों के साए में,
कौन से परिन्दे ने सनोबर के दरख्त पर अपना
घोंसला बनाया है?
अब बुलबुल का गाना कौन सुनेगा

गुरुब होते सूरज के सामने
मुरझाया गुलाब सर निगूँ है
रात में झिलमिलाते सितारों के औन्धे आसमान तले
अफ़सोस अब कौन गायेगा,
कौन कहानी को बढ़ा-चढ़ा कर कहेगा
कौन कहेगा, नहीं नहीं..
मैंने तो उस तरह से सुना था
अब आशिक कहाँ जाएँगे।
—लैला मजनूँ से





इस्माइल चुनारा
कृत

लैला मजनून

Laila Majnun
لایله مجنون

निर्देशन	राम गोपाल बजाज
सह निर्देशन व ध्वनि	राजेश सिंह
अनुवाद	साबिर इरशाद उस्मानी
वेशभूषा	अम्बा सान्याल
प्रकाश	अवतार साहनी
मंच सज्जा	अदिती विस्वास
गति संरचना	अमित सक्सेना

रंगमण्डल प्रथम प्रदर्शन :

अभिमंच सभागार

26-30 अप्रैल 2023 सायं 7 बजे

अतिरिक्त प्रदर्शन :

29, 30 अप्रैल 2023 दोपहर 3 बजे

इस्माइल चुनारा

नाटककार

नाटककार, कवि, निबन्धकार और चित्रकार इस्माइल चुनारा का जन्म दक्षिण अफ्रीका में हुआ था, लेकिन आपका अधिकांश जीवन ब्रिटेन में बीता जहाँ आपने एक शोध रसायनज्ञ, गणित शिक्षक और विज्ञान के व्याख्याता के रूप में काम किया। लेखन दशकों से आपकी महत्वाकांक्षा थी, लेकिन पारिवारिक ज़िम्मेवारियों के चलते आप पहले उसे वहन नहीं कर पाये। बाद में, जब आपने लिखना शुरू किया, तो प्रकाशकों से लगातार अस्वीकार भी झेलने पड़े। आपके जीवन के कटु अनुभव भी प्रकाशकों को प्रभावित नहीं कर पाये। लेकिन इसने आपके लिखने के संकल्प को ही मजबूत किया और आपको जो लगा लिखना चाहिए वह बड़े पैमाने पर लिखा और किसी भी हाल में बाज़ार के लिए लिखने से मना कर दिया। आपकी लेखन शैली में एक तरह का काव्यात्मक जोश है जो पारम्परिक शब्दावली की तुलना में कहीं ज़्यादा ऊर्जा की माँग करता है। कथानक में बुद्धिमत्तापूर्ण ट्विस्ट, विश्वसनीय चरित्र चित्रण और एक सोची-विचारी विषयवस्तु ने आपको एक अलग मुकाम पर खड़ा कर दिया।

हजारों मील दूर और भिन्न संस्कृतियों के लोगों के बीच रहने के बावजूद आप एक बार भी अपने देश की संस्कृति से विलग नहीं हुए। यह तथ्य आपके लेखन में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है, चाहे वह नाटक 'यादों के बुझे हुए सवरे' का शाहजहाँ हो जो औरंगज़ेब के हुक्म के तहत नज़रबन्द है, या 'क्वेश्चन मार्क' की श्रीमती सी. राजेन्द्रन और अहमदाबाद में रहने वाले उनके चार मानसिक रोगी हों। इसके साथ ही आपने दक्षिण अफ्रीका में रंगभेद, औद्योगिक श्रमिकों की दुर्दशा और इंग्लैंड में अफ्रीकी और एशियाई समुदायों के अलगाव पर भी बहुतेरा लिखा।

आपकी प्रमुख कृतियों में 'लैला मजनूँ', 'ए रिवर अक्रॉस अनसीन ड्रिवाइड' (उर्दू संस्करण 'यादों के बुझे हुए सवरे'), 'दे बर्न पीपल, दे डू' (क्वेश्चन मार्क), 'यतीमखाना', 'अ ब्रोक्न चेयर', 'आफ्टरनून', 'द स्टोन', 'कम्पार्टमेन्ट नम्बर सी-35' आदि शामिल हैं। 'अ ब्रोक्न चेयर', 'यतीमखाना', 'आफ्टरनून' और 'द स्टोन' सभी 'एक टूटी हुई कुर्सी एवम् अन्य नाटक' नामक पुस्तक में प्रकाशित हुए हैं।

इसके अलावा आपने कई लघु कथाएँ व कविताएँ लिखीं। आपकी लघु कथाएँ, कविताएँ व अन्य लेखन दक्षिण अफ्रीका, यू.के., यू.एस.ए., भारत और पाकिस्तान में छपी कई पुस्तकों व पत्रिकाओं में नमूदार हुई हैं। आपके रेडियो नाटक बीबीसी वर्ल्ड सर्विस व जर्मन रेडियो नेटवर्क पर प्रसारित होते रहे हैं। आपने ग़ालिब के जीवन पर एक ख़ास टेब्लो पर भी काम किया। श्री चुनारा का निधन 2021 में लन्दन में हुआ।



फोटो विवरण : (सबसे ऊपर) नाटककार श्री इस्माइल चुनारा (बीच में) श्री इस्माइल चुनारा, पूर्व राज्यपाल महामहिम श्री राजमोहन गाँधी, रंग निर्देशक श्री रामगोपाल बजाज व श्री रुद्रप्रसाद सेनगुप्ता कोलकाता में शब्दाकार, दिल्ली की प्रस्तुति 'लैला मजनूँ' से सम्बन्धित परिचर्चा में भाग लेते हुए। (नीचे) श्री चुनारा महामहिम व अन्य के साथ 'लैला मजनूँ' नाटक देखते हुए



Ismail Choonara

The Playwright

A playwright, poet, essayist and a painter, Ismail Choonara was born in South Africa but has lived most of his life in U.K., where he has worked as a research chemist, mathematics teacher and lecturer in science. Writing had been his ambition for decades, but he couldn't afford it since he had to take care of his family. Later, when he started writing, he lost count of the number of rejections he faced from publishers. His bitter experiences of life did not impress publishers. But it only steeled his resolve to pen what he felt should be addressed and refused to write for the mass market. His style of writing has highly charged poetic diction that packs far more energy than a more conventional vocabulary. His intelligent plotting, credible characterization and a well-considered theme made him a class apart.

Living thousands of miles away and among people of different cultures did not for once alienate him from his country. This can be seen in his writings, whether it is 'Shah Jahan' (in the play 'Yaadon Ke Bujhe Huye Savere') languishing in house arrest under Aurangzeb's dictates or Mrs. C. Ragendran and her four mentally disturbed patients living in Ahmedabad (in the play Question Mark). Along with this he has also written on apartheid in South Africa, the plight of industrial workers and the segregation of the African and Asian communities in England.

His works include 'Layla Majnu', 'A River Across Unseen Divide' (Urdu version Yaadon ke Bujhe Huye Savere), 'They Burn People, They Do' (Question Mark?), 'Yateemkhana', 'A Broken Chair', 'Afternoon', 'The Stone', 'Compartment No. C-35'. 'Broken Chair', 'Yateemkhana', 'Afternoon' and 'The Stone' has all been published in one book titled Ek Tuti Hui Kursi Evam Anye Natak.

Apart from this he has written many short stories and poems. His short stories, poems, and other pieces, have appeared in books and journals in South Africa, U.K., U.S.A., India and Pakistan, his radio plays broadcast on the World Service for the B.B.C., and German Radio network. He was also working on a possible tableaux on Ghalib. Mr. Choonara died in London in 2021.

राम गोपाल बजाज

निदेशक

भारतीय रंगजगत में अपनी पाँच दशक की निरन्तर सक्रियता और उत्कृष्ट प्रतिमानों से महत्वपूर्ण स्थान और आदर प्राप्त करने वाले रंगकर्मी प्रो. राम गोपाल बजाज का जन्म (1940) दरभंगा, बिहार में हुआ था। आपने बिहार विश्वविद्यालय से स्नातक उपाधि और राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय से 1965 में नाट्यकला में विशेषज्ञता अर्जित की। बाद में आप राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के निदेशक (1995–2001) बने।

रंगमंच के प्रति प्रो. बजाज का रुझान छोटी उम्र से ही रहा। बाद में दिल्ली में अपने रंगकर्मी मित्रों स्व. ओम शिवपुरी, स्व. सुधा शिवपुरी, स्व. बी.एम. शाह, स्व. ब.व. कारन्त एवं श्री मोहन महर्षि के साथ मिलकर आपने 'दिशान्तर' नामक नाट्य संस्था की स्थापना की। इस बीच अनेक संस्थानों में नाटक प्रभाग के प्रमुख रहते हुए महती कार्य किया जिनमें मॉडर्न स्कूल, दिल्ली में रंगकला का अध्यापन (1969–73); पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़ के भारतीय थिएटर विभाग में रीडर; पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला के नाट्य कला विभाग में प्रोफेसर व विभागाध्यक्ष (1979–80) शामिल हैं। वर्ष 2002 में आप हैदराबाद केन्द्रीय विश्वविद्यालय के सरोजनी नायडू स्कूल में डॉ. राधाकृष्णन पीठ के प्रोफेसर व विभागाध्यक्ष रहे।

एक अभिनेता के रूप में आपके नाटकों 'सुनो जनमेजय', 'हयवदन', 'बेगम का तकिया', 'घासीराम कोतवाल', 'अन्धा युग', 'तुंगलक' एवं 'किंग लियर' को बड़ी सराहना मिली। इसी निरन्तरता में आपके द्वारा निर्देशित 'अजातघर', 'आषाढ़ का एक दिन', 'सूर्य की अन्तिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक', 'अन्धा युग', 'कैद-ए-हयात', 'स्कन्दगुप्त', 'मुक्तधारा' (पंजाबी भाषा में), 'सीगल', 'भूख आग है', 'तलघर', 'जल डमरू बाजे' और 'कामिया' आदि नाटकों ने आपकी प्रतिष्ठा को और समृद्ध करने का काम किया। वर्ष 2008 में आपने शब्दाकार थिएटर समूह की स्थापना की और 'लैला मजनूँ' नाटक की एक भव्य प्रस्तुति मंचित की।

रानावि निदेशक रहते हुए आपने अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के नाट्य समारोह 'भारत रंग महोत्सव', बाल महोत्सवों 'जश्न-ए-बचपन', 'बाल संगम' के आयोजन के अलावा रंग पत्रिका 'रंग प्रसंग' और 'थिएटर इंडिया' का प्रकाशन शुरू किया।

प्रो. बजाज ने वर्ष 1969 से 72 तक जानी मानी पत्रिका 'दिनमान' में नाटकों की समीक्षाएँ और आलोचना भी लिखीं और बादल सरकार, बर्टोल्ट ब्रेख्त व गिरीश कर्नाड आदि लेखकों के लगभग पन्द्रह नाटकों के हिन्दी अनुवाद किये। आपने कई जाने माने कवियों की कविताओं का प्रभावी पाठ किया है जो कि वाचिक शब्द की प्रधानता के प्रबल आग्रही होने के चलते काफी चर्चित रहे। आप आकाशवाणी, दूरदर्शन, धारावाहिकों और सिनेमा में भी लगातार सक्रिय रहे, जिनमें 'तमस', 'बसन्ती', 'मैं आजाद हूँ', 'मासूम', 'मिर्च मसाला', 'चाँदनी', 'परजानिया', 'मैंगो ड्रीम्स', 'द मिथ', 'हवेन त्सांग', 'जॉली एल.एल.बी.-टू' आपके महत्वपूर्ण कार्य हैं।

अपनी इस सुदीर्घ एवं निरन्तर सृजन-यात्रा में आपको अब तक अनेक मान-सम्मान एवं पुरस्कार प्राप्त हुए हैं जिनमें पद्मश्री, संगीत नाटक अकादेमी पुरस्कार, साहित्य कला परिषद का परिषद सम्मान, नान्दीकार सम्मान, राधारमण सम्मान, बिहार कला पुरस्कार (लाइफ़टाइम अचीवमेंट) तथा राष्ट्रीय कालिदास सम्मान शामिल हैं। आपको 2016 में संगीत नाटक अकादेमी की रत्न सदस्यता मिली, वहीं 2018 में यूनेस्को आई.टी.आई. ने विश्व रंगमंच दिवस पर आपको सन्देश प्रसारित करने के लिए आमंत्रित किया।



Ram Gopal Bajaj

The Director

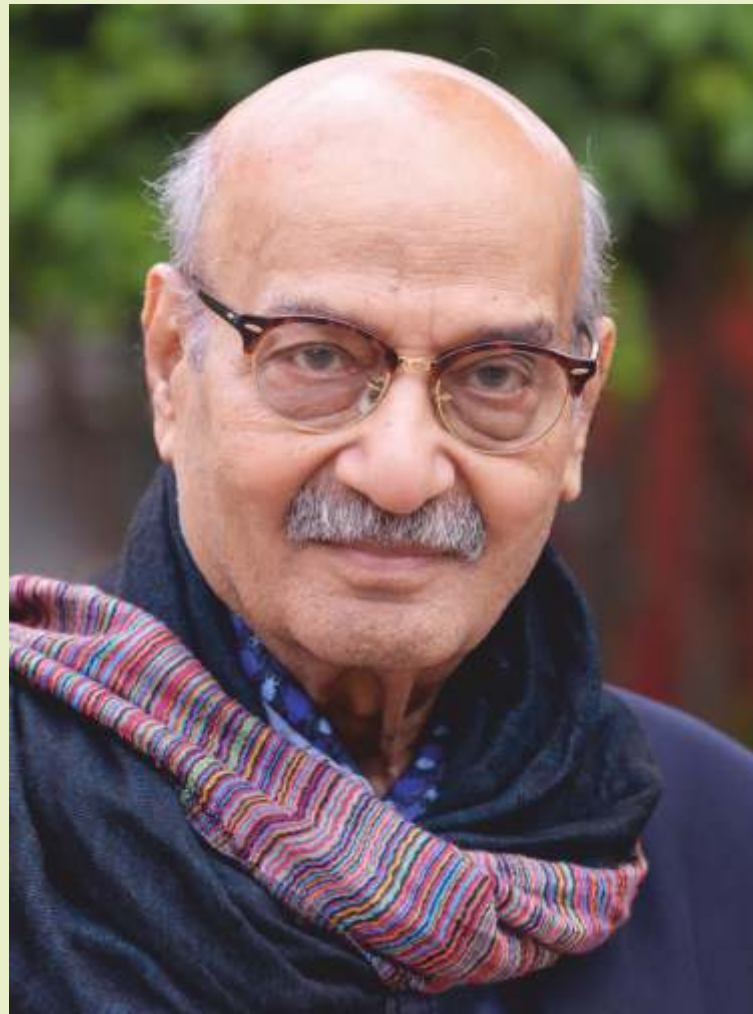
A theatre artist who earned an important place and respect in the Indian theatre world with his five-decade-long journey and exemplary work, Prof. Ram Gopal Bajaj was born (in 1940) in Darbhanga, Bihar and completed his graduation from Bihar University. Later, he graduated in dramatic art from the National School of Drama in 1965 and became the Director of the institute between 1995-2001.

Prof. Bajaj was inclined towards theatre at a young age. In Delhi, he with his theatre friends Om Shivpuri, Sudha Shivpuri, BM Shah, B.V. Karanth and Mohan Maharshi established a theatre organization named 'Dishantar'. Meanwhile, he worked as head of the Drama Division in many institutions that include— as a drama teacher at Modern School, Delhi (1969-73), worked as Reader at the Department of Indian Theatre, Panjab University, Chandigarh and as a Professor and Head of the Department of Dramatic Arts, Punjabi University, Patiala (1979-80). In the year 2002, he has also been Professor and Head of Dr. Radhakrishnan Chair at S. N. School of Central University of Hyderabad for a year.

As an actor, he has acted in many well-known plays such as 'Suno Janmejay', 'Hayavadan', 'Begum Ka Takia', 'Ghasiram Kotwal', 'Andha Yug', 'Tughlaq', 'King Lear' and got broad appreciation. In continuance to acting, as a successful and virtuous director, he has directed plays like 'Ajatghar', 'Ashad Ka Ek Din', 'Surya ki Antim Kiran Se Surya ki Pahli Kiran Tak', 'Andha Yug', 'Qaid-e-Hayat', 'Skandagupta', 'Muktdhara' (in the Punjabi language), 'Seagull', 'Bhukh Aag Hai', 'Talghar', 'Jal Damru Baje' and 'Kamiya' etc. to enrich further his reputation. In 2008, he established the Shabdakar Theater Group

and staged a grand production of 'Laila Majnun'.

While holding the post of Director at NSD, he conceptualized and established the international level theatre festival 'Bharat Rang Mahotsav' for adults; 'Jashn-e-Bachpan', 'Bal Sangam' for children and initiated the publication of a magazines 'Rang Prasang' and 'Theatre India' on the overall aspects of theatre in the institute.



Prof. Bajaj has written reviews and criticism of plays in the prestigious 'Dinman' magazine between 1969 and 1972 and translated plays of eminent playwrights like Badal Circar, Bertolt Brecht and Girish Karnad etc. into Hindi. He is known for his effective recitation of poems by different poets that have been strongly insistent on the primacy of the word. He has been equally active in All India Radio, Doordarshan, Cinema and theatre. Some of his important telefilms and films include — 'Tamas', 'Basanti', 'Main Azad Hoon', 'Godhuli', 'Masoom', 'Mirch Masala', 'Hip Hip Hurray', 'Chandni', 'Parzania', 'Mango Dreams', 'The Myth', 'Xuan Zang', 'Jolly L.L.B-2'.

In this long and indefatigable journey of excellence and creation, he has received many honours and awards so far, including Padmashree, Sangeet Natak Akademi Award, Parishad Samman of Sahitya Kala Parishad, Nandikar Samman, Radharaman Samman, Bihar State Government's Bihar Art Award (Lifetime Achievement) and the National Kalidas Samman given by the Government of Madhya Pradesh. He received the Ratna Sadasyta of Sangeet Natak Akademi in 2016 and UNESCO ITI invited him to broadcast a message on World Theater Day in 2018.

नाटक के बारे में

यह मोहब्बत की एक ऐसी शायरी है जिसमें लैला मजनूँ के अफसाने को फिर से एक रिवायती शायरी और ड्रामे के अन्दाज़ में बयाँ किया जा रहा है जिसमें 7वीं सदी के शुरुआती सालों में मिडिल-ईस्ट की खानाबदोश बेडू कौम की आबो-हवा में पल रहे दो जवान बाशिन्दों की ज़िन्दगी का मुख्तसर पता चलता है।

नाटक की शुरुआत में औरतों का एक कोरस इस अफसाने को दर्शकों के सामने पेश करता है। वो इस दास्तान की सरसरी बैकग्राउण्ड बताता है कि कैसे इन दो जवान दिलों में प्यार पनपा जिसके जुनून और शिद्दत ने लोगों को यह सोचने पर मजबूर कर दिया कि कैसे पर किसी बुरी रूह का साया है। नाटक में आगे हम लैला के वालदेन को यह बात करते हुए पाते हैं कि कैसे और लैला के बीच पनप रही मुहब्बत ने उनके खानदान को शर्म के अलावा और कुछ नहीं दिया इसलिए लैला को अब घर पर ही नज़रबन्द रखा जाना चाहिए और उसे एक बावकार खानदान के किसी बावकार इंसान की बीबी बनाने की तैयारी की जानी चाहिए।

उधर कैसे अपने वालिद सैय्यद को लैला के वालदेन से बात कर लैला से उसकी शादी की पेशकश करने को मना लेता है। सैय्यद एक मालदार, ताक़तवर और इज़्ज़तदार आदमी है, जिसे एक बेटा और वारिस चाहिए था और शादी के कई सालों बाद कैसे की पैदाइश से उसकी यह ख्वाहिश पूरी हुई थी, इसीलिए वह उससे बेइतहा प्यार करता है। अपने बेटे की खातिर वह लैला के वालिद से बात करता है लेकिन वह शादी की इस पेशकश को ठुकरा देता है।

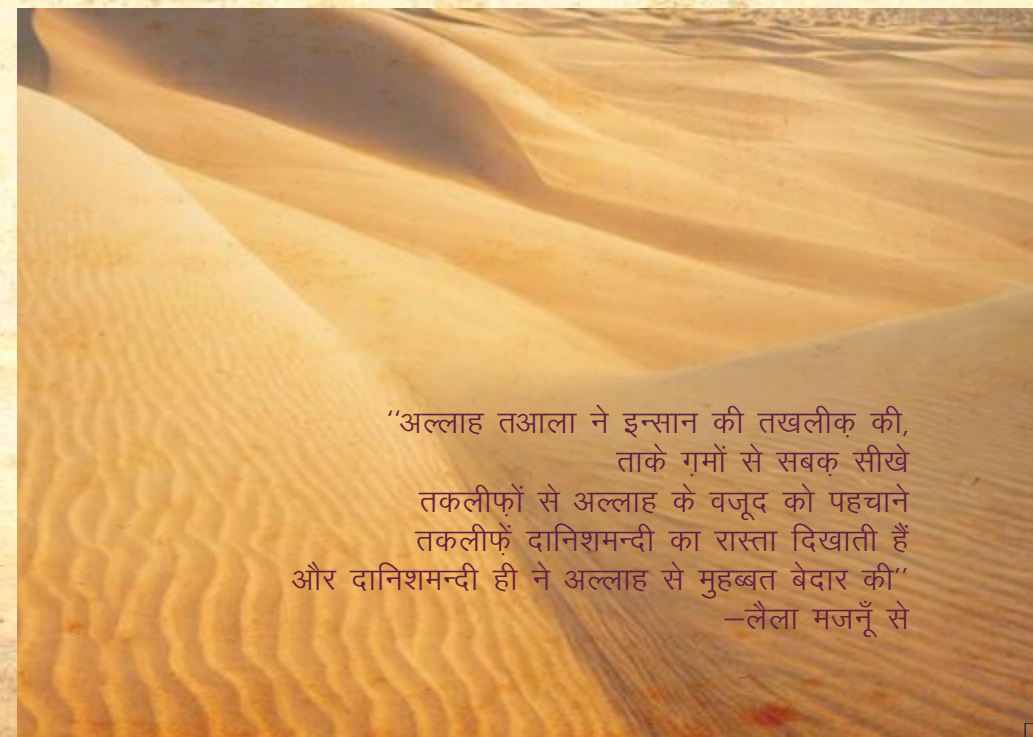
मायूस हो कैसे लैला को देखने तक से परहेज करने लगता है और उदासी के दलदल में डूबने लगता है। उसके वालिद उसे इस दर्द से निजात दिलाने और अल्लाह की दुआ पाने के लिए ज़ियारत पर मक्का ले जाते हैं। लेकिन वह काबा में फूट-फूट कर रोने लगता है—‘कोई भी दिन मेरा इस दर्द से आज़ाद न होगा। मुझे प्यार करने दें, अल्लाह, मुहब्बत के लिए मुहब्बत करने दें, और मेरी मुहब्बत को उससे सौ गुना महान बना दें जैसा वह था या है!’ फिर वह लैला की खूबसूरती और अपनी मुहब्बत की शायरी गुनगुनाने लगता है। उसे सुनने लोग आने लगते हैं। वह भले बुरे का भेद न जान बेतरतीब दूर वीरानों में भटकने लगता है। उसे लोग मजनूँ कहने लगते हैं—पागल और न जाने क्या क्या, उसका मज़ाक उड़ाते हैं। वह जंगल में घूमता, बचता, खोजता और उस खोज में और भी बड़ी मुहब्बत पा लेता है।

इसी तरह भटकते हुए एक दिन उसकी मुलाकात शहज़ादे नौफ़ील से होती है जो लैला को उसकी ज़िन्दगी में वापस लाने में उसकी मदद करने का वादा करता है। अपने वादे के मुताबिक नौफ़ील तमाम कोशिश करता है, वह लैला के वालिद को पकड़ लेता है और उसकी फौज़ को हरा देता है। लेकिन उसकी ताक़त एक वालिद के सामने टिक नहीं पाती और वह पीछे हट जाता है।

आख़िरकार लैला की शादी शहज़ादे इब्ने सालिम से हो जाती है जो खुद लैला से इतनी मुहब्बत करता है। बावजूद इसके कि उसने लैला के बारे में कई तरह की बातें सुनी है वह उसे अपनी बीबी कुबूल कर लेता है। इस बीच कोरस के साथ अफसानानिगारों की एक जोड़ी आमिर और साबिर नैरेटर के रूप में नमूदार होते हैं और ड्रामे में कई बार तमाशबीन बन मुहब्बत, दर्द और जुदाई की इस अविश्वसनीय कहानी के गवाह बनते हैं बल्कि यह कहना ज़्यादा बेहतर होगा कि अपने हर वक़्फ़े को वह लैला और मजनूँ के साथ जीते हैं।

वक़्त बीतता है, इब्ने सालिम की मौत की ख़बर आती है। दो साल तक उसकी मौत का सोग मनाने के बाद लैला कैसे को खोजने के लिए निकल पड़ती है। लेकिन जब वह उसे खोज लेती है तो उसे महसूस होता है कि जिससे वह मुहब्बत करती थी वह कैसे कब का फ़ना हो गया है और उसकी जगह एक नये कैसे ने ले ली है जो अब लैला के उसी अक्स से मुहब्बत करता है जो उसके दिल में मौजूद है, और हर हाल में अफ़ज़लतरीन है।

गमगीन लैला कैसे को छोड़ देती है क्योंकि वह इस दुनियावी ज़िन्दगी के परे मुहब्बत और रोशनी की ज़िन्दगी में दाख़िल हो गया है। लैला मर जाती है, कोरस उसे उसके अंजाम तक पहुँचाता है। तमाम ख़ला या—हबीबी के नारों से गूँज उठती है जो इस ग़ैबी मिलन को बख़ूबी बयाँ करती है। दूर ग़ैब से एक दर्दनाक चीख सुनाई देती है जो या—हबीबी पुकारने के लिए भी तरसती है। वह किसकी रूह है?



“अल्लाह तआला ने इन्सान की तखलीक़ की,
ताके गुमों से सबक़ सीखे
तकलीफ़ों से अल्लाह के वजूद को पहचाने
तकलीफ़ें दानिशमन्दी का रास्ता दिखाती हैं
और दानिशमन्दी ही ने अल्लाह से मुहब्बत बेदार की”
—लैला मजनूँ से

About the Play

A love poetry, stretching way back, the story of Layla Majnun is retold yet again as a narrative poem and a play, tracing the lives of two young people, both hemmed in by what was around them; the people, the places and the nature of the nomadic Bedu society in the early years of the 7 Century A.D in the Middle East.

The story begins at a point where the chorus, a group of women, introduce this tale to the audience. They give a brief background of how love blossomed in the hearts of these two young people and that its passion and intensity makes people think that Queys is possessed by an evil spirit. Next we find Layla's parents discussing how this love between them (Queys and Layla) has brought the family nothing else but shame and that Layla must now be kept at home and groomed to become the wife of some honourable man belonging to a respectable family.

Queys convinces his father Sayyid to go and speak to Layla's parents and put forward his proposal to marry Layla. Sayyid, a man of wealth, power, and prestige, who desired a son and heir and was blessed with Queys after several years of marriage, loves him dearly. For his son's sake he

goes and speaks to Layla's father who refuses this proposal.

Disheartened Queys refrains from seeing her and he begins to slip into melancholy. His father takes him on a pilgrimage to Mecca, to seek God's help in freeing him, but Majnun strikes the Kaaba and cries—"none of my days shall ever be free of this pain. Let me love, oh my God, love for love's sake, and make my love a hundred times as great as it was and is!" He chants poems of Layla's beauty and his love. Many come to hear him. He runs away into the wilderness, becoming unkempt, not knowing good from evil. People start calling him Majnun—mad and many things, make fun of him. He roams in the jungle, survives, searches and in that search finds even greater love.

While wandering, one day, he meets prince Naufel who promises to help him by bringing Layla back into his life. Naufel tries, captures Layla's father and defeats his forces. But his strength cannot match that of a father and Naufel retreats. Eventually Layla is married to Ibn Salem, a prince who is so love struck by Layla that he accepts her as his wife despite all that is being said about her. All along the chorus and a pair of storytellers Amir & Sabir appear as the narrators and at times as onlookers who not only bare witness to this incredible tale of love, pain and separation but also live every moment of it with Layla and Majnun.

Time passes and one hears of Ibn Salem's death. After having mourned his death for two years Layla sets out on a journey to find Queys. She finds him, but, realizes that the one she loved is lost and has been replaced by a new Queys who is so much in love with the image of Layla that is present in his heart, and is similar to that of the supreme power. Broken-hearted she leaves Queys who has transcended from this mundane life to one full of love and light. Layla dies and is carried out by the chorus. The entire space is filled with a resonating chant of Ya-Habibi that illustrates this divine union. From infinity a painful cry is heard that too yearns for Ya-Habibi. Whose soul is it?

“मैंने बिफरे दरियाओं को चिंघाड़ते देखा है,
या मुन्दी-मुन्दी चाल से चलकर
उनका समन्दर में जा मिलना देखा है,
और रेगिस्तान की तरह फैले हुए बेकिनार
समन्दरों को देखा है।”

—लैला मजनूँ से



निर्देशकीय

लै

ला मजनों कहते ही हमारे अन्दर एक खास तरह की रोमानियत और लोक परम्परा की अनुभूति होने लगती है लेकिन जब हमने इस्माइल चुनारा जी द्वारा लिखित नाटक लैला मजनों पढ़ा तो यह हमको एकदम हटकर लगा। चुनारा जी ने बहुत सारे नाटक लिखे हैं। महत्वपूर्ण लेखक रहे हैं।

बहुत ही काव्यात्मक शैली में है यह नाटक। बहु स्तरीय अर्थ हैं इसमें। लैला मजनों के जो किस्से हम नौटंकी या लोक कथाओं के माध्यम से जानते सुनते थे यह उससे एकदम अलग है। यह जो विषय है जिसमें आत्मा का आत्मा से प्रेम... आत्मा का शरीर से प्रेम... शरीर शरीर है या आत्मा? ये सारे सवाल तो हैं इसमें। यह ड्रामा एक तरह का इल्यूजन है। “दिस इज़ इल्यूजन विदिन इल्यूजन एंड विदिन दैट देयर इज़ अ रियल।” यहाँ तक कि नाटक में लैला एक जगह कहती है—‘काश, मैं सिर्फ एक कहानी होती।’ ये वह कहानी भी नहीं है जिसे आप कहानी कहना कहते हो। है तो कहानी ही लेकिन क्या वह सिर्फ कहानी ही है या फिर जीवन का सत्य भी है? सत्य भी उस रूप में सत्य नहीं है जिस रूप में हम सत्य को जानते रहे हैं। इस स्तर पर है यह नाटक। यह विषय ऐसा है मुझे लगता है अभी भी हम इसे समझने की कोशिश कर रहे हैं।

यह नाटक पहले मैंने दिल्ली की शब्दाकार संस्था के लिए किया था अब दुबारा कर रहा हूँ। लेकिन इस नाटक की खूबसूरती और जो बुनावट है वह अपनी विषयवस्तु से इतनी गहरी जुड़ी हुई है इसका अहसास मुझे इन रिहर्सल्स में पहले से ज्यादा हो रहा है। नाटक पाँच कोरस के माध्यम से आगे बढ़ता है। बीच-बीच में दृश्य आते जाते रहते हैं। कोरस एक तरह से प्रधान तत्व है इस नाटक का।

मेरे जेहन में लैला साफ नहीं थी। लैला के बारे में सुना यही था कि वह काली थी ऐसी थी वैसी थी तो जैसी लड़की होनी चाहिए मैं उसकी तलाश में था उसके इंतजार में था। लक्ष्मी ने मुझे वह भूमिका छीन ली। वह प्रॉक्सी कर रही थी जब मैं अम्मी का (कविता) का रिहर्सल करा रहा था। वह क्यू देने के लिए प्रॉक्सी कर रही थी। लेकिन उसने जिस तरह से करना शुरू किया और बताते वक्त, क्योंकि हम अल्काजी साहब के शार्गिद हैं, तो स्पीच के पैटर्न तय करके करते थे चाहे वह प्रॉक्सी ही क्यों न हो। तो वह वैसे ही प्रॉक्सी देने लगी तो मैंने कहा—‘या अल्लाह मैं कहाँ लैला तलाश रहा हूँ। यह जो प्रॉक्सी कर रही है यही तो लैला है।’ इस तरह से उसने भूमिका ले ली।

अब जब राजेश ने कहा कि रंगमण्डल में ‘लैला मजनों’ कीजिए तो एक छोटी लड़की जो बंगाल की जात्रा पृष्ठभूमि से है, उससे मैंने एक दिन पढ़ने के लिए कहा तो उसने जिस ढंग से पढ़ा मुझे उम्मीद की किरण नज़र आयी कि— हाँ, यहाँ लैला है।

नाटक में नृत्य संयोजन का भी खास योगदान है जिसे एक तरह से नृत्य तो नहीं कहेंगे पर अभिनेता की देहगति कैसी हो, ब्लॉकिंग कैसी हो, वह भी इसका अभिन्न हिस्सा था। उसमें भी एक तरह की काव्यात्मकता है जिसे रचने में अमित सकसेना ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। अदिती बिस्वास भी इस नाटक से जुड़ी रही हैं मंच परिकल्पना में उनका योगदान है। बहुत ही न्यूनतम और प्रभावी स्पेस उन्होंने बनाया ताकि वह बहुत हावी न हो और जो बात हम कहना चाहते हैं कह भी पायें और विषय से जुड़ी अरेबियन पृष्ठभूमि की अनुभूति भी मिले। शुरू में इसका संगीत भास्कर चंदावरकर जी करने वाले थे जब वह किसी कारणवश नहीं आ पाये तो राजेश ने प्रॉक्सी संगीत बनाना शुरू किया। फिर एक दिन भास्कर जी रिहर्सल देखने आ गये तो प्रॉक्सी संगीत

जो चल रहा था उसे सुनकर उन्होंने कहा—‘इस लड़के ने जो संगीत तैयार किया है आप उसी के साथ नाटक करिये शायद मैं इससे बेहतर नहीं कर पाऊँगा।’ संगीत में राजेश ने उसी पृष्ठभूमि का भाव पकड़ने की कोशिश की है। उसमें कुछ प्रसिद्ध भारतीय व विदेशी कलाकारों की मूल कम्पोजिशन हैं तो वहीं बहुत सारी ध्वनियाँ मिलाई गयीं हैं। खासतौर से आबिदा परवीन और साबरी ब्रदर्स के दो संगीत अंशों का इस्तेमाल उसने किया जो उस जगह के लिए बहुत ही मुफीद हैं। इन सभी जाने-माने कलाकारों का बहुत-बहुत आभार जिनके कार्यों को हम इस नाटक में इस्तेमाल कर रहे हैं।

जहाँ तक निर्देशन प्रक्रिया की बात है मेरा जोर अधिकांशतः भाषा पर रहता है। भाषा के माध्यम से ही मैं दृश्य रचता हूँ। अभिनेताओं को मिनिमल एक्शन दिये गये और वह इंटरनलाइजेशन से भाव-भंगिमाओं को अच्छी तरह से उभार पायें इस पर ज्यादा ध्यान दिया। राजेश साथ न होता तो मैं यह नाटक नहीं कर सकता था। पहले जब हम इसे कर रहे थे कहने के लिए उसने हमें असिस्ट किया, सहयोगी निर्देशक है पर उसका भी उतना ही योगदान है जितना कि शायद मेरा। क्योंकि नाटक हम दोनों को बाँध रहा था। उसके दिमाग में भी कुछ आ रहा था इसको ऐसे कर लें या ऐसे कर लें। इस तरह से ये नाटक बना है। मेरे लिए यह कहना बड़ा मुश्किल है कि मैं ही इस नाटक का निर्देशक हूँ? मुझे लगता है कि पूरी टीम, खासकर के राजेश और अमित साथ साथ थे, और उस वक्त जो लड़के-लड़कियाँ शामिल हुए थे उस छोटी सी जगह में छोटे-छोटे इशारों को समझते हुए बात को आगे बढ़ाने की कोशिश कर रहे थे। मुझे नहीं मालूम एक दो चेहरे अगर नज़र नहीं आते तो हम शायद रंगमण्डल में करने के लिए राजेश की बात नहीं मानते। लेकिन यह फैसला कि आखिरकार हम यहाँ ‘लैला मजनों’ करें ये रंगमण्डल प्रमुख का है और अब मैं भी इस फैसले से खुश हूँ। नाटक अब दर्शकों सामने है। वह इसे किस रूप में लेते हैं यह तो प्रदर्शन के बाद ही पता चलेगा।



As soon as we say Layla Majnun, we start feeling a special kind of romanticism and folk tradition, but when we read the play 'Layla Majnun' written by Ismail Choonara, we found it completely different. Choonara ji has written many plays. He has been an important writer.

This play is in a poetic form. It has multiple-levels of meaning. It is completely different from the stories of Layla Majnu that we used to know and hear through Nautanki or folk tales. This is a kind of subject in which the soul's love for the soul...soul's love for the body...OR the body is the body or the soul? Such questions arise. This drama is a kind of illusion. "This is an illusion within illusion and within that there is a real." Even in the play, Layla says at one place – "I wish I could only be a story." The story is not even what we call 'telling a story'. It is story, but is it only a story or is it also the truth of life? Truth is also not truth in the sense we have known truth. This drama runs at this level. It's the subject I think we're still trying to understand.

I had done this play earlier for the Shabdakar group of Delhi, now I am doing it again for the Repertory Company. But the beauty and texture of this play is so closely related to its theme that I am realizing this more than ever in these rehearsals. The play progresses through five narrators (chorus) which is in a way the main element of the play. The scenes keep coming and going in between.

Cast of Layla was not clear in my mind. I had heard about her that she was of dark complexion; she was like this or that, so I was looking for her and waiting. Lakshmi snatched that role from me. She was doing proxy while I was rehearsing Ammi's (Kavita) part. She was proxying to give the cue. I used to do it by fixing the pattern of speech, as we have learnt it from Alkazi sahib. Even if it was a proxy, the way she started doing it was just like that, so I said - 'Ya Allah, where am I looking for Layla? She herself is doing the proxy.' That is how she took the role.

Now when Rajesh told to do 'Layla Majnun' in the Repertory, I asked a little girl from Bengal's Jatra background to read it one day, so, the way she read it gave me a ray of hope that- 'yes, here is Layla'.

There is immense contribution of dance compositions in the play that in a way which cannot be called dance, but, how the body movement should

be, how the blocking of the actors should be, that became an integral part of the compositions. There is a kind of rhythm in that too, in the making of which Amit Saxena played an important role. Aditee Biswas has also been associated with the play. She has contributed to the set design. She has created a very minimal and effective space so that it does not dominate much and we could say what we wanted to say and also get the feel of the Arabian landscape related to the theme. Initially Bhaskar Chandavarkar was supposed to compose its music, when he could not come due to some reason, Rajesh started making proxy music. Then one day when Bhaskar ji came to see the rehearsals, listening to the proxy music that was being played, he said, "Perhaps, I may not be able to do better with the music. Please use music this boy has composed." Rajesh tried to keep the feel of it, he has used original compositions of some famous Indian and foreign artists, while many sounds have been added. Particularly, he used two pieces of music by Abida Parveen and Sabri Brothers, which are very suitable for the place. Many thanks to all these stalwarts whose works we are using in this play.

As far as the directing process is concerned, my focus is mostly on language. It is through language that I create scenes. Minimal actions were given to the actors and more attention was paid to the internalization of the expressions so that they could emerge well. Had Rajesh not been with me, I could not have done this play. Earlier when we were doing this, he assisted me to say, was the associate director, but he probably has as much contribution as I do. Because the drama was attracting both of us. And something was coming in his mind too, to do this way or that way. This is how this play was made. It is very difficult for me to say that I am the director of the play! I think the whole team, especially Rajesh and Amit were with me throughout, and the boys and girls who had joined at that time, were trying to take the process forward understanding my small gesture in that small rehearsal space. I don't know, if one or two faces were not seen, I probably would not have listened to Rajesh's request to do it in the Repertory. But the decision that we should finally do 'Layla Majnun' here is of the Chief of the Repertory Company and now I am also happy with this decision. The play is now before the audience. In what form they take it, will be known only after the performance.

साबिर इरशाद उस्मानी

अनुवादक

बाराबंकी, उत्तर प्रदेश में जन्मे साबिर इरशाद उस्मानी मैट्रिक पास करने के बाद 50 के दशक की शुरुआत में कराची चले गये थे और फिर वहाँ से लंदन की राह ली। वहाँ आपने एल.ई. व रीजेंट स्ट्रीट पॉलिटेक्निक, जो अब वेस्टमिंस्टर विश्वविद्यालय का हिस्सा है, में अंशकालिक रूप से अध्ययन करने के साथ-साथ वहाँ काम भी किया। 90 के दशक में कुछ अन्य लोगों के साथ आपने उर्दू ट्रस्ट और यूरोपीय उर्दू राइटर्स सोसाइटी की स्थापना की, जिसके बाद में आप महासचिव भी बने। आप नयी बस्ती लेखकों पर केन्द्रित एक उर्दू मासिक परवाज़ के सम्पादक भी रहे। आपके प्रमुख साहित्यिक कार्यों में – 'किताब नुमा' के लिए विभिन्न लेख; खुसरो पर सदाह के पाँच हिस्से; मौलाना मोहम्मद अली जौहर के जीवन पर पुस्तक; तथा इस्माइल चुनारा के नाटक 'यादों के बुझे हुए सवेरे' और 'लैला मजनूँ' आदि शामिल हैं। आपने अंग्रेज़ी साहित्य में रोमानी परम्परा पर भी काम किया है।

Sabir Irshad Usmani

The Translator

Born in Barabanki, U.P., Sabir Irshad Usmani Matriculated there, moved to Karachi in early 50's and then to London, working and studying part time at L.E., and Regent Street Polytechnic, now part of the Univ. of Westminster. In the 90 with others founded the Urdu Trust and the European Urdu Writers' Society, of which he became Gen. Secretary, and editor of Parvaz, an Urdu monthly concentrating on New Basti writers. Literary works include – various articles for Kitab Numa; five parts in Sadah on Khusro; Book on the Life of Moulana Mohd. Ali Johar; and Translation work of Ismail Choonara's plays 'Yaadon ke bujhe huye sahere' and Layla Majnun. He also worked on the Romantic Tradition in English Literature.



अम्बा सान्याल

वेशभूषा

अम्बा सान्याल का मंच पर पदार्पण 'हीर रॉंझा' नाटक से हुआ था। कई वर्षों तक भारतीय कला केन्द्र की रामलीला में कैकई की भूमिका निभाने के अलावा आप रानावि की प्रस्तुति 'जसमा ओड़न' के लिए मास्क और हेड गियर परिकल्पना-निर्माण में शान्ता गाँधी की सहायक रहीं। एक वस्त्र-सज्जा परिकल्पक के रूप में आप रानावि की अनेकानेक प्रस्तुतियों के अलावा फिरोज़शाह कोटला मैदान में प्रदर्शित 'अन्धा युग' और 'तुगलक' की हालिया प्रस्तुतियों का हिस्सा रही हैं। भारत सरकार की एक विशिष्ट परियोजना के तहत आपने परम्परागत साड़ियों और भारत में साड़ी बाँधने की विभिन्न शैलियों का दस्तावेज़ीकरण किया है, जिसके अब तक तीन खण्ड प्रकाशित हुए हैं। आप संगीत नाटक अकादेमी पुरस्कार विजेता हैं और वस्त्रसज्जा परिकल्पना के लिए चमनलाल ढिंगरा पुरस्कार पा चुकी हैं। आपने कई फिल्मों के लिए भी वेशभूषा परिकल्पना की है और बहुप्रशंसित 'द शिप ऑफ़ थिसियस' व 'कहानी 2' फिल्मों में अभिनय किया है।



Amba Sanyal

Costumes

Amba Sanyal appeared on stage in 'Heer Ranjha' and in the role of Kaikeyi in 'Ramlila' production of Bhartiya Kala Kendra for many years. She assisted Shanta Gandhi in designing the mask and head gear for National School of Drama's production 'Jasma Odan', and has been a part of numerous NSD productions as costume designer as well as the recent productions of 'Andha Yug' and 'Tughlaq' at Feroz Shah Kotla ground. She has also documented the traditional Saris and draping styles of India for a government of India project of which three volumes have been published. She is a Sangeet Natak Akademi Awardee and has received Chamanlal Dhingra award for costume designing. She has designed costumes for films and recently acted in the awarded film 'The Ship of Theseus' and 'Kahani 2'.



अवतार साहनी

प्रकाश

सन् 58 में शिमला (हि.प्र.) में जन्मे, अवतार साहनी ने 1984 में निर्देशन में विशेषज्ञता के साथ राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय (रानावि) से स्नातक उपाधि प्राप्त की। बाद में, रानावि ने आपको मणिपुर में श्री रतन थियाम के मार्गदर्शन में 'पारम्परिक प्रदर्शन कला और आधुनिक रंगमंच के बीच संवाद' विषय पर काम करने के लिए एक वर्ष की फेलोशिप प्रदान की।

आपको रंगमंच के क्षेत्र में कई प्रतिष्ठित पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है, जिनमें संगीत नाटक अकादेमी पुरस्कार-2017 (एलाइड थिएटर आर्ट्स-प्रकाश परिकल्पना में योगदान के लिए), चमनलाल मेमोरियल अवार्ड-2018 (मंच प्रकाश परिकल्पना में उत्कृष्टता के लिए), संस्कार भारती, नयी दिल्ली के नाट्य गुरु सम्मान-2017, नटसम्राट, नई दिल्ली द्वारा सर्वश्रेष्ठ निर्देशक का पुरस्कार शामिल हैं।

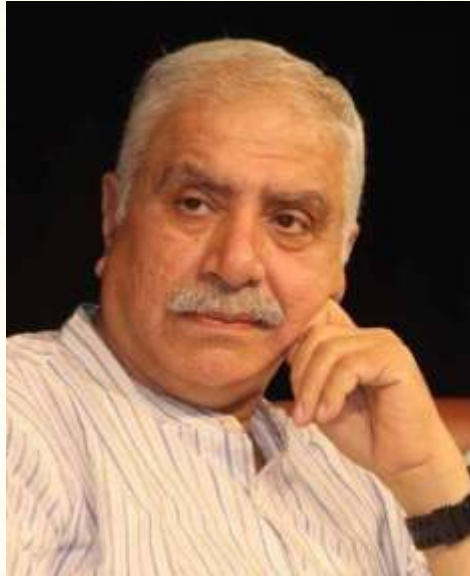
आपने 2004 में आर्ट (एक्टर्स रैपर्टरी थिएटर) नाम से अपने थिएटर ग्रुप की स्थापना की और ग्रुप के अलावा, श्री राम सेंटर रंगमण्डल, नयी दिल्ली; भारतेन्दु नाट्य अकादेमी रंगमण्डल, लखनऊ; साहित्य कला परिषद रंगमण्डल, नयी दिल्ली; कोरस रंगमण्डल, इफाल के साथ लगभग 45 नाटकों का निर्देशन किया है। आपके निर्देशन में तैयार नाटक 'उलझन' को 1992 में संगीत नाटक अकादेमी, नयी दिल्ली के राष्ट्रीय नाट्य महोत्सव के लिए चुना गया था और व्यापक रूप से सराहा गया था। साल 2018 में आपने 'रशोमन' नाटक की परिकल्पना व निर्देशन किया है।

आप कई रंग संस्थानों में अतिथि संकाय हैं और देश भर में कई रंग कार्यशालाएँ आयोजित कर चुके हैं। अनेक अन्तर्राष्ट्रीय रंग महोत्सवों में भाग लेने के अलावा आप इब्सन इन्टरनेशनल थिएटर फेस्टिवल, नयी दिल्ली; लखनऊ, चेन्नई, अमृतसर में हुए रानावि के भारत रंग महोत्सव; और मॉस्को (दिल्ली सरकार) में डेज ऑफ़ देहली के तकनीकी निदेशक रहे। आप कॉमनवेल्थ गेम्स, नई दिल्ली (गेम्स विलेज)-2010 के लाइट डिजाइनर भी रहे हैं।

अवतार साहनी ने प्रसन्ना, बैरी जॉन, रतन थियाम, रॉबिन दास, ए.टी. सुबाकी, संजय उपाध्याय, सूर्यमोहन कुलश्रेष्ठ आदि जाने-माने रंग निर्देशकों के लिए प्रकाश परिकल्पना की है। वर्तमान में, आप एक स्वतंत्र रंग निर्देशक, परिकल्पक व अभिनेता के रूप में काम कर रहे हैं।

Avtar Sahni

Lights



Born in Shimla (H.P) in 1958, Avtar Sahni graduated from National School of Drama (NSD) in 1984 with specialization in Direction. Later, NSD granted him a fellowship for one year to work on the subject "Interaction Between Traditional Performing Arts and Modern Theatre" under the guidance of Shri Ratan Thiyam in Manipur.

He has been awarded with a number of prestigious awards in the field of Theatre such as, Sangeet Natak Akademi Award-2017 (in Allied Theatre Arts—for contribution in Stage Lighting Design), Chamanlal Memorial Award-2018 (Excellence in Theatre Lighting Design), Natya Guru Samman by Sanskar Bharti, New Delhi in 2017, Best Director Award by Nat Samrat Theatre Awards, New Delhi.

He established his Theatre group called ART (Actor's Repertory Theatre) in 2004 and directed about 45-plays with the group; with Shri Ram Centre Repertory Company, New Delhi; Bhartendu Natya Academy Rang Mandal, Lucknow; Sahitya Kala Parishad Repertory, New Delhi, Chorus Repertory, Imphal. His directorial

'Uljan' was selected by Sangeet Natak Akademi, New Delhi for its National Theatre Festival in 1992 and was widely acclaimed. Recently, he has designed & directed 'Rashomon' (2018).

He is a visiting faculty at a number of theatre institutions and conducted many theatre workshops across the country. He has participated in numerous international theatre festivals and worked as technical director for Ibsen International Theatre Festival, New Delhi; Bharat Rang Mohatsav (NSD) at Lucknow, Chennai, Amritsar; and for Days of Delhi in Moscow (Govt. of Delhi). He was also a Light Designer for Commonwealth Games 2010, New Delhi (Games Village).

Avtar Sahni has designed lights for well known theatre directors like Prasanna, Barry John, Ratan Thiyam, Robin Das, A.T. Subaki, Sanjay Upadhyay, Suryamohan Kulshrestha among others. Presently, he is working as a freelance theatre Director, Designer and Actor.



राजेश सिंह ध्वनि व सह-निर्देशन

बिहार विश्वविद्यालय से स्नातक, राजेश सिंह ने रंगकर्म में शुरुआती प्रशिक्षण श्रीराम सेन्टर फॉर परफॉर्मिंग आर्ट्स, नयी दिल्ली से प्राप्त किया। बाद में, आपने साहित्य कला परिषद रंगमण्डल व श्रीराम सेन्टर रंगमण्डल में एक कलाकार के रूप में काम किया। तत्पश्चात आपने 2006 में रंग तकनीक व परिकल्पना में विशेषज्ञता के साथ राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय से स्नातक उपाधि प्राप्त की और गंधर्व महाविद्यालय से आपने संगीत में प्रशिक्षण प्राप्त किया। इन्लैक्स छात्रवृत्ति के तहत आपने 2008-09 में लन्दन एकेडमी ऑफ़ म्यूजिक एण्ड ड्रामेटिक आर्ट्स, यूनाइटेड किंगडम से रंग परिकल्पना, निर्देशन व मंच प्रबन्धन का अध्ययन किया।

ब.व. कारन्त, के.एन. पणिकर, राम गोपाल बजाज, देवेन्द्रराज अंकुर, मोहन महर्षि व अन्य प्रख्यात रंग हस्तियों के साथ काम करते हुए आपने परिकल्पना व निर्देशन की अपनी विशेष शैली विकसित की। आपके प्रशंसित निर्देशकीय कार्यों में 'रास', 'मेटामोर्फोसिस', 'रामलीला', 'जाँच पड़ताल', 'राग दरबारी', 'अपना अपना सवाल', 'पोस्टर', 'एक जोरदार लड़की की कहानी', 'एक कलम सड़क किनारे', 'ब्लैकबोर्ड लैण्ड', 'हाउ टू डिसेपियर कम्पलीटली एण्ड नेवर बी फाउण्ड', 'आदमी और तंत्र', 'कबाब', 'बाबूजी', 'व्यक्तिगत' आदि शामिल हैं।

साहित्य कला परिषद, दिल्ली सरकार ने आपके दो नाटकों को सर्वश्रेष्ठ नाटक के तौर पर चुना और आपको सर्वश्रेष्ठ निर्देशक के पुरस्कार से सम्मानित किया है। 2009 में राम गोपाल बजाज द्वारा निर्देशित नाटक 'लैला मजनूँ' की ध्वनि परिकल्पना के लिए आपको महिन्द्रा एक्सीलेंस पुरस्कार दिया गया। राजेश को वर्ष 2017 में दृश्य परिकल्पना के लिए केन्द्रीय संगीत नाटक अकादेमी के बिस्मिल्लाह खान युवा पुरस्कार से सम्मानित किया गया। वर्तमान में आप राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय रंगमण्डल के प्रमुख हैं।



Rajesh Singh

Associate Director and Sound & Music

A graduate of Bihar University, Rajesh Singh initially received training in Theatre at Shriram Centre for Performing Arts, New Delhi. Later, he worked as an artist at Sahitya Kala Parishad Repertory Company and Shriram Centre Repertory Company. Then, he graduated from the National School of Drama with specialization in Theatre Techniques and Design in 2006. He also got training in Music from Gandharva Mahavidhyalaya. With the INLAKS Scholarship, he studied Advance Theatre Design, Direction and Stage Management at London Academy of Music and Dramatic Arts, United Kingdom in 2008-2009.

He developed his own style in Design and Direction while working with eminent theatre personalities such as B.V. Karanth, K. N. Panikkar, Ram Gopal Bajaj, D. R. Ankur, Mohan Maharishi and others. His acclaimed directorial ventures are 'Raas', Kafka's 'Metamorphosis', 'Ramleela', 'Jaanch Padtaal', 'Raag Darbari', 'Apna Apna Sawaal', 'Poster', 'Ek Zordaar Ladki ki Kahani', 'Ek Kalam Sadak

Kinare', 'Blackboard Land', 'How to Disappear Completely and Never be Found', 'Aadami aur Tantra', 'Kabab', 'Babuji', 'Vyaktigat' etc.

His plays were selected under Best Play category twice and he got Best Director Award from Sahitya Kala Parishad, Govt. of Delhi. He received Mahindra award for Excellence in Theatre Arts for Sound Design of the play 'Laila Majnu' directed by Ram Gopal Bajaj in 2009. Rajesh was also awarded with Central Sangeet Natak Akademi's Bismillah Khan Yuva Puraskar in the field of Scenic Design in the year 2017. Presently, he is the Chief of the National School of Drama Repertory Company.



अदिती बिस्वास

मंच-सज्जा

इ रास्मस मुंडस स्कॉलर और यूनिवर्सिटी ऑफ वारविक व यूनिवर्सिटी वैन एम्स्टर्डम से इन्टरनेशनल परफॉर्मेंस रिसर्च में एमए अदिती बिस्वास ने 2004 में राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय से रंग तकनीक व परिकल्पना में स्नातक उपाधि प्राप्त की। देश विदेश के प्रख्यात रंग निर्देशकों से जुड़ी रही और उनके नाटक डिजाइन कर चुकीं अदिती अन्तर्विषयी, अन्तरसांस्कृतिक, नृत्य/देहगति आधारित ऐसे कार्य करती हैं, जो बड़े पैमाने पर लिंग, पहचान और देह की राजनीति जैसे विषयों से सम्बन्धित होते हैं। आपका नाटक 'पोर्ट्रेट ऑफ डोरा' जहाँ थिएटर उत्सव-08 में दिखाया गया, वहीं उसी वर्ष आपने रानावि रंगमण्डल के साथ 'अनटाइटल्ड' किया। 2013 में, आपने इंडो-जर्मन नृत्य-कलाकार सैंड्रा चटर्जी के सहयोग से आधुनिक भारतीय चित्रकार अमृता शेर-गिल के जीवन और कार्यों से प्रेरित एक नृत्य-नाटक 'अनफिनिशड' निर्देशित किया। फिर एक्टर फैक्टर थिएटर कम्पनी के सहयोग से आपने गिरीश कर्नाड द्वारा लिखित 'बलि' किया।

2015 में, अदिती ने प्रियंका पाठक, जो कि 2013 की रानावि स्नातक हैं, के साथ इल्हाम कलेक्टिव नामक ग्रुप की स्थापना की। इस कलेक्टिव का उद्देश्य कला के लिए सम्वाद, सहयोग और सृजन के लिए जगह प्रदान करना है। कलेक्टिव की पहली प्रस्तुति '√2' (स्क्वायर-रूट टू) थी, उसके बाद हेरोल्ड पिंटर के 'बिट्रेयल' और 'द डम्ब वेटर' पर आधारित 'क्लोज' निर्देशित किया। आपने रंग शंकरा रंगमण्डल के साथ अपना पहली थिएटर फॉर यंग ऑडियन्स प्रस्तुति '86000 सेकेंडालु' निर्देशित किया, जो कि मार्टिन बाल्टशिएट के मूल जर्मन नाटक 'ओनली ए डे' के सुरेंद्रनाथ के अनुवाद पर आधारित था। बाद में 2018 में, आपने इल्हाम कलेक्टिव की पहली थिएटर फॉर यंग ऑडियन्स प्रस्तुति 'ही/शी' का निर्देशन किया। 2019 में, आपने सीन स्टीलर्स, दिल्ली के लिए राजीव जोसेफ के 'एनिमल्स आउट ऑफ पेपर' का निर्देशन किया। इस अनूठी प्रस्तुति में भारतीय मंच पर पहली बार ओरिगेमी आर्ट को नाट्य प्रस्तुति के साथ मिलाते हुए देखा गया। आपने 2020 में मुम्बई निवासी अभिनेताओं अक्षय डोगरा व पद्मा दामोदरन के साथ एक ऑनलाइन-वर्चुअल रंग प्रस्तुति '5 इयर्स ऑफ़ आफ्टरनून' का निर्देशन किया, जो कि हेरोल्ड पिंटर के द बिट्रेयल से प्रेरित था। आपने मल्लिका तनेजा द्वारा निर्देशित एक ऑनलाइन नाटक 'एलीग्डली' में अभिनय भी किया है।

अदिती को नाट्य निर्देशन के लिए 2012 का संगीत नाटक अकादेमी का बिस्मिल्लाह खान युवा पुरस्कार प्रदान किया गया। राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, जामिया मिलिया विश्वविद्यालय, लेडी श्रीराम कॉलेज और फ़्लेम विश्वविद्यालय सहित भारत के कई प्रमुख शैक्षणिक संस्थानों और विश्वविद्यालयों में अतिथि संकाय, अदिती वर्तमान में द ब्रिटिश स्कूल, नई दिल्ली में थिएटर पढ़ा रही हैं।



Aditee Biswas

Set

An Erasmus Mundus Scholar and a MA in International Performance Research from the University of Warwick and Universiteit van Amsterdam, Aditee Biswas completed her master's in Theatre techniques & Design from the National School of Drama in 2004. Having associated with and designed for many eminent theatre directors from India and abroad, Aditee creates interdisciplinary, intercultural, dance/movement based work, largely dealing with the themes of gender, identity and politics of the body. Her play 'Portrait of Dora' featured at the Theatre Utsav'08, followed by 'Untitled' with NSD Repertory in 2008. 'In/Out/In', a dance theatre piece created in collaboration with the Max Mueller Bhawan. In 2013, she directed 'Unfinished', a dance-theatre piece inspired by the life and works of the modern Indian painter Amrita Sher-Gil, in collaboration with Indo-German

choreographer-performer Sandra Chatterjee. In 2013 she did 'Bali' written by Girish Karnad in association with the Actor Factor Theatre Company.

In 2015, Aditee instituted the Ilhaam Collective partnering with Priyanka Pathak, also a graduate of NSD. It's first production was '√2' (Square-root Two), followed by 'Close', based on Harold Pinter's Betrayal and The Dumb Waiter. She directed her first TYA (Theatre for Young Audience) '86000 Sekendalu', written by Martin Baltschiet in German as 'Only A Day' and translated by Surendranath, with the Ranga Shankara Repertory Company. Later in 2018, she directed 'S/he' Ilhaam Collective's first TYA Production. In 2019, she directed Rajiv Joseph's 'Animals out of Paper' for the Scene Stealers, Delhi. This unique production saw the merging of Origami Art with a theatre production. She also directed an online-virtual theatre production called '5 Years of Afternoons', and acted in an online play 'Allegedly' directed by Mallika Taneja.

Aditee received Sangeet Natak Akademi's Bismillah Khan Yuva Puraskar in 2012 for her work in Theatre Direction. A visiting faculty member at several leading educational institutions and universities in India, including National School of Drama, Jamia Milia, Lady Shri Ram College and FLAME University, she currently teaches theatre at The British School, New Delhi.

अमित सक्सेना गति संरचना

राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, नयी दिल्ली के वर्ष 2006 के स्नातक अमित सक्सेना अभिनय के साथ कई अन्य विधाओं जैसे कि छऊ नृत्य, माइम में भी प्रशिक्षित हैं। इसके अलावा आपने कलरीपयट्टु, कॉमेडिया-डेल-आर्टे, विएनीज़ वॉल्ट्ज, ज़ेन नृत्य, रचनात्मक नृत्य व रेकी और योग की कार्यशालाओं में भी भाग लिया है। भारतीय संस्कृति एवं कला-प्रशंसा के लघु पाठ्यक्रमों का हिस्सा बने हैं और प्रदर्शन कलाओं पर केन्द्रित यू.जी.सी. नेट परीक्षा उत्तीर्ण की है।

अमित ने भारतीय रंग जगत के कई वरिष्ठ रंग-निर्देशकों राम गोपाल बजाज, देवेन्द्रराज अंकुर, कीर्ति जैन, त्रिपुरारी शर्मा, डी. पी. सिन्हा, के. एस. राजेन्द्रन, सुरेश भारद्वाज, लोकेन्द्र त्रिवेदी, के. के. कोहली, जे. पी. सिंह, अमितेश ग़ोवर, राजेश सिंह, गोविन्द सिंह यादव, भूमिकेश्वर सिंह आदि के नाटकों में अभिनय किया है। देश की नृत्य जगत की जिन विभूतियों की नृत्य-प्रस्तुतियों में भी आपने हिस्सा लिया उनमें छऊ नृत्यगुरु शशधर आचार्य, विदुषी सोनल मानसिंह, विदुषी शोवना नारायण, विदुषी रंजना गौहर, मणिपुरी नृत्यगुरु सिंघजीत सिंह आदि शामिल हैं।

विभिन्न प्रस्तुतियों और रंग-कार्यशालाओं के लिए अमित जर्मनी, जापान, इटली, रोमानिया, फ्रांस आदि देशों का भ्रमण कर चुके हैं। अमित ने कई प्रयोगशील लघु नाटकों का लेखन किया है जैसे हवेली संगीत एवं कथक नृत्य पर केन्द्रित 'कान्ह कुँवर के अष्टसखा'; स्वामी विवेकानंद के जीवन से प्रभावित दो नाटक 'विवेक : एक अद्वैत गान' और 'विवेक : अमरत्व की ओर' आदि।

आपके नाटकों का भारत रंग महोत्सव-2023, थिएटर ओलम्पिक-2018, भारतेन्दु नाट्य महोत्सव-2018, भरतमुनि नाट्य महोत्सव-2018, राष्ट्रीय माइम महोत्सव कोलकाता-2017, युवा नाट्य महोत्सव-2016, हिन्दी अकादेमी के लोक महोत्सव-2012 व 2017 और विरासत महोत्सव, देहरादून- 2014 जैसे नामचीन समारोहों में मंचित हुए हैं।

अमित द्वारा लिखित एवं निर्देशित कुमाऊँनी लघु फिल्म 'चै रुणी दयाप्त' (इंतज़ार का देवता) कई राष्ट्रीय-अन्तराष्ट्रीय फिल्म महोत्सवों में प्रदर्शित हुई है। श्री देवेन्द्रराज अंकुर के मार्गदर्शन में आपने 'नाट्यशास्त्र...आंगिक' नामक शैक्षणिक फिल्म का निर्माण भी किया है।

अमित देश की विभिन्न सांस्कृतिक संस्थाओं के साथ कई रंग-कार्यशालाओं का आयोजन करते रहे हैं जिनमें अभिनय, शारीरिक गति संचालन, रचनात्मक एवं लोक नृत्य के आयाम प्रमुख रहे हैं।



Amit Saxena Movement

An alumnus of National School of Drama, 2003-2006, Amit Saxena has obtained PG Diploma in Electronic Media and attended various short-term courses on Indian Culture conducted by the National Museum Institute, New Delhi. He has received training in Seraikella Chhau dance, Mime; attended workshops on Kalaripayattu; Commedia dell'arte; Viennese Waltz; Zen Dance; and Creative dance; and orientation lectures on Reiki and Yoga Vidya.

Amit has worked with renowned theatre directors like Ram Gopal Bajaj, D.R. Ankur, Kirti Jain, Tripurari Sharma, D.P. Sinha, K.S. Rajendran, Suresh Bharadwaj, Lokendra Trivedi, K.K. Kohli, J.P. Singh, Amitesh Grover, Rajesh Singh, Govind Singh Yadav, Shri Bhoomikeshwar Singh and others. He has been a part of various dance ballets and presentations of reputed dancers of India,

majorly his Chhau Guru Shri Shashadhar Acharya, Smt. Sonal Mansingh, Smt. Shovana Narayan, Smt. Ranjana Gauhar, and Guru Singhjit Singh. He also did presentations and workshops in the countries like Romania, Mauritius, Reunion (France), Germany, Japan, and Italy.

He has devised and scripted experimental shows like 'Kanh Kunwar Kay Ashtsakhya' based on Haveli Sangeet of Nathdwara and Kathak, and two plays based on the life of Swami Vivekananda, 'Vivek: Amrutva ki Ore' and 'Vivek: Ek Advait Gaan'. His plays have been staged in various prestigious Theatre festivals like the Bharat Rang Mahotsav-2023; Theatre Olympics NSD-2018; Bhartendu Natya Mahotsav SKP-2018; Bharat Muni Natya Mahotsav SKP-2018; National Mime Festival Kolkata-2017; Yuva Natya Mahotsav SKP-2016; Lok Mahotsav-2012 & 2017 of Hindi Akademi; and Virasat Festival Dehradun-2014.

Amit has an avid interest in the Documentation of Intangible Cultural Heritage of India. He has written and directed a Short Film based on the issue of Migration affecting Uttarakhand, *God of Waiting*. The film was screened in various International Short Film Festivals. In 2021, he made a film - *Natyashastra Angika...* under the Guidance of Prof. D.R. Ankur.

संतोष कुमार सिंह सैंडी

ध्वनि सहयोगी व मिक्सिंग

समकालीन भारतीय संगीत, प्रदर्शन कला और नवीन मीडिया के क्षेत्र में संतोष कुमार सिंह (सैंडी) एक जाने-माने संगीतकार और ध्वनि परिकल्पक हैं। आपके नाम पर 450 से अधिक मंच प्रस्तुतियाँ, 80 टेलीविज़न धारावाहिक, 60 वृत्तचित्र, 120 एलबम, 38 प्रमुख फ़िल्में हैं। आप भारत भर और विदेशों में 40 से अधिक बैंड व कॉयर का हिस्सा रहे हैं और विभिन्न गैर-सरकारी संगठनों के साथ जुड़कर विशेष रूप से दिल्ली राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के निराश्रित बच्चों के साथ सक्रिय रूप से काम करते रहे हैं। वर्तमान में आप अपनी साउण्ड डिज़ाइन कम्पनी 'साउण्डप्रो-1' के साथ कार्यरत हैं।



Santosh Kumar Singh Sandy

Sound Associate & Mixing

A well-known name in the field of contemporary Indian music, performing arts and new media, Santosh Kumar Singh (Sandy) is a music composer and sound designer. More than 450 stage productions, 80 television serials, 60 documentaries, 120 albums, 38 major film productions are in his name. He has also been part of more than 40 band start-ups and choir throughout India and abroad. Working with various NGO's, he has been actively involved in working with street children of the National Capital Region of Delhi. As for now, he is busy with assignments for his sound design company 'SOUNDPRO1'.

दुर्गा शर्मा

वेशभूषा सहयोगी

सन् 2005 में रानावि से रंग तकनीक, डिज़ाइन व निर्देशन में स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त दुर्गा शर्मा ने राजस्थान विश्वविद्यालय से नाट्यकला में एक वर्षीय डिप्लोमा किया था। आप एक ऐसी रंगकर्मी हैं, जो पिछले 20 वर्षों से एक अभिनेत्री, निर्देशक और शिक्षक के रूप में लगातार काम कर रही हैं। दुर्गा ने देवेन्द्रराज अंकुर, रॉबिन दास, सी. आर. जाम्बे, रंजीत कपूर, मोहन महर्षि, एम. के. रैना, सतीश आनंद, बंसी कौल, हेमा सिंह, चितरंजन त्रिपाठी, जॉन क्लार्क, कीर्ति जैन, अनुराधा कपूर, अभिलाष पिल्लई आदि कई भारतीय व विदेशी निर्देशकों के साथ अभिनय किया है। आपने 'राइडर टू द सी', 'गोदान', 'अन्धा युग', 'जूलियस सीजर', 'पंच लाइट' और 'साधो देखो जग बौराना' जैसे कई नाटकों का निर्देशन व परिकल्पना की है और टीवी व फ़िल्मों में भी काम कर रही हैं। आपने अब तक 'बधाई दो', 'कौन कितने पानी में', 'गली गुलियाँ', 'बन्दा' फ़िल्मों और 'होम शान्ति' नामक वेब सीरीज में काम किया है।



Durga Sharma

Costumes Associate

Completed her Post Graduate Diploma in Theatre Technique, Design and Direction from NSD in 2005 Durga Sharma also did one year Diploma in Dramatic Arts from Rajasthan University. She is a Theater practitioner works as an actor, director and teacher since past 20years.

Durga has acted in the productions under eminent Indian and foreign directors such as D. R. Ankur, Robin Das, C. R. Jambe, Ranjit Kapoor, Mohan Maharishi, M.K. Raina, Satish Anand, Bansi Kaul, Hema Singh, Chitranjan Tripathi, John Clark, Kirti Jain, Anuradha Kapur, Abhilash Pillai etc. She has directed and designed many play like 'Rider to the Sea', 'Godan', 'Andha Yug', 'Julius Caesar', 'Panchalight', 'Sadho Dekho Jag Baurana' and many more. She also works in TV and films, important include movies like 'Badhai Do', 'Kaun Kitne Paani Mein', 'Gali Guleyan', 'Banda' and web series like 'Home Shanti' etc.

हिमांशु बी जोशी

विवरणिका

लेखक, परिकल्पक व निर्देशक हिमांशु बी जोशी का राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय से एक लम्बा जुड़ाव रहा है। आपने जहाँ रानावि व इसके विभिन्न केन्द्रों के पोस्टर-ब्रोशर तथा प्रोस्पैक्टस परिकल्पित किये हैं वहीं एक महत्वपूर्ण प्रकाश परिकल्पक के तौर पर आपने कीर्ति जैन, अनुराधा कपूर, एमके रैना, बिपिन कुमार, भारती शर्मा, अभिलाष पिल्लई, दीपन शिवरामन, सावि सावरकर आदि कई प्रसिद्ध निर्देशकों व कलाकारों के नाटकों/प्रदर्शनियों के लिए प्रकाश परिकल्पना की है। आप भारत रंग महोत्सव, भारत में जर्मन महोत्सव, पूर्वा (महिला रंग निर्देशकों का महोत्सव), डेज़ ऑफ रशियन कल्चर और जापान फ़ाउण्डेशन, टोक्यो द्वारा निर्मित 'मैमोरीज़ ऑफ़ अ लीजेंड' के तकनीकी समन्वयक रहे हैं। आप लीला (दक्षिण एशियाई महिला रंगकर्मी महोत्सव) के मुख्य तकनीकी समन्वयक व केरल के अन्तरराष्ट्रीय रंग महोत्सव (इटफ़ोक) के महोत्सव संयोजक भी रहे हैं। हिमांशु ने कई नाटक लिखे, अनुवादित व रूपान्तरित किये हैं। इसके अलावा आपने 'खोज', 'छतरियाँ', 'हानूश', 'बंबई के फ़ुटपाथ पर एक हज़ार रातें', 'अ-राम की शक्ति पूजा', तथा 'शो मस्ट गो ऑन' के साथ-साथ बच्चों के कई नाटक निर्देशित किये हैं।

रंगमंच में भारत सरकार की कनिष्ठ व वरिष्ठ शोधवृत्ति प्राप्त हिमांशु देश भर में सभागारों के निर्माण परामर्शदाता के रूप में कार्य करने के साथ-साथ प्रकाश व्यवस्था, नाट्य लेखन व मंच परिकल्पना में प्रशिक्षण भी देते रहे हैं। प्रकाश परिकल्पना में योगदान के लिए आपको नटसम्राट सम्मान से नवाज़ा गया है। वर्तमान में आप हिन्दी की जानी मानी रंग पत्रिका नटरंग के अतिथि सम्पादक हैं।



Himanshu B Joshi

Brochure

A writer, designer & director, Himanshu B Joshi has a long association with National School of Drama. He has designed poster-brochures of many productions and prospectus for NSD, Delhi and its centers (Sikkim & Tripura). As a prominent lighting designer, he designed lights for the plays by many eminent directors & artists including Kirti Jain, Anuradha Kapur, MK Raina, Bipin Kumar, Bharti Sharma, Abhilash Pillai, Deepan Shivaraman, Savi Savarkar and others. He has been technical coordinator for Bharat Rang Mahotsava, German Festival in India, Poorva (Women Directors' Theatre Festival), Days of Russian Culture in India and India shows of 'Memories of Legend' produced by Japan

Foundation, Tokyo. He was the Chief Technical Coordinator for Leela (South Asian Women's Theatre Festival) and Festival Coordinator for International Theatre Festival of Kerala (ITFoK). Himanshu has written, translated and adapted a number of plays. He has also directed plays like 'Khoj', 'Chhatariyan', 'Hanush', 'Bambai ke Foothpath par Ek Hazar Ratein', 'A-Ram ki Shakti Puja', 'Show Must Go on' and many children's plays.

A recipient of Junior and senior research fellowships on theatre from Govt. of India, Himanshu has been teaching lighting, play writing, and space designing as well as providing consultancy services for constructing theatre halls across the country. He was bestowed with Natsamrat award for his contribution in lighting design. Presently, he is the Guest Editor to the Natarang, a prestigious theatre journal in Hindi.





Ajay Kumar



Pooja Gupta



Anamika Sagar



Potshangbam Rita Devi



Susheel Kant Mishra



Mazibur Rehman



Bipin Ghobale



Bikram Lepcha



Aditi Arya



Shilpa Bharti



Sugandha Pandey



Vikash Gupta



Ashwin Verma



Madhurima Tarafder



Shivani Bhartiya



Anant Sharma



Hira Lal Roy



Ankur Singh



Saurabh Meshram



NSD REPERTORY COMPANY ARTISTS 2023-24



Satyender Malik



Suman Kumar



Dheeraj Kumar



Bhavanjali Saxena



Madhavi Sharma







मंच पर

कोरस-1	माधवी शर्मा
कोरस-2	पोतशंगबम रीता देवी
कोरस-3	शिवानी भारतीय
कोरस-4	शिल्पा भारती
कोरस-5	सुगन्ध पाण्डे/पूजा गुप्ता
कैस/मजनूँ	अनन्त शर्मा
लैला	मधुरिमा तरफदार
लैला के पिता	विकाश गुप्ता/अश्विन वर्मा
लैला की माँ	पूजा गुप्ता/सुगन्ध पाण्डे
सैयद	सुमन कुमार
इब्ने सालिम	बिक्रम लेप्चा
नौफील	मज़िबुर रहमान
आमिर	शिव प्रसाद गौड़/अंकुर सिंह
साबिर	अजय कुमार/सौरभ गुरुदास मेश्राम
सिपाही	बिपीन घोबाले, धीरज कुमार, अजय कुमार हीरा लाल रॉय, राम गोपाल बजाज

आभार

आबिदा परवीन
साबरी ब्रदर्स
शब्दाकार, दिल्ली
लिटिल थेस्पियन, कोलकाता
शान्तनु देवरा
गज़ाला अमीन
मिस्टिक म्यूज़िक

मंच परे

प्रकाश परिकल्पना	अवतार साहनी
प्रकाश सहायक	सुशील कान्त मिश्रा
प्रकाश व्यवस्था	सुलेमान, सुनील, शीतल
मंच परिकल्पना	अदिति बिस्वास
मंच निष्पादन	विक्रम, तक्मीर, रिज़वान
वेशभूषा परिकल्पना	अम्बा सान्याल
वेशभूषा सहयोगी	दुर्गा शर्मा
वेशभूषा प्रभारी	पार्वती बिष्ट
वेशभूषा निष्पादन	अभिमन्यु कुमार, सत्येन्द्र मलिक, हीरा लाल रॉय
ध्वनि परिकल्पना	राजेश सिंह
ध्वनि अंकन, परिकल्पना सहायक	संतोष कुमार सिंह 'सैंडी'
ध्वनि अभियांत्रिकी	सतीश के
ध्वनि निष्पादन	मुकेश कुमार, नवीन सिंह ठाकुर
ध्वनि निष्पादन	मुकेश कुमार, सुनील सिंह
सामग्री निष्पादन व प्रभारी	मोतीलाल खरे
पोस्टर	अली रज़ा, मज़िबुर रहमान
ब्रोशर परिकल्पना	हिमांशु बी जोशी
ब्रोशर फोटोग्राफ	कुमुद रंजन
मंच पार्श्व सहायक	सभी रंगमण्डल कलाकार
फोटोग्राफी	दीपक कुमार, पियूष श्रीवास्तव, सचिन कुमार
प्रचार	ई. गजलक्ष्मी, प्रकाश झा, सुरेन्द्र
प्रदर्शनी	राजबल, पवन कुमार
विग परिकल्पना व सामग्री	उमा झुनझुनवाला
मेकअप	हीरा लाल राय, बिपिन, शिव प्रसाद गौड़
रंगमण्डल प्रशासन	जुबेर बेदी, आदित्य वर्मा, पवन कुमार, धनराज
निर्देशक के सहायक व	रवीन्द्र राजेश्वर सिंह
प्रस्तुति सहायक	अदिति आर्या
सहायक निर्देशक	अनीस आजमी
भाषा व उच्चारण सलाहकार	उमा झुनझुनवाला, अज़हर आलम
देवनागरी आलेख प्रतिलेखन	साबिर इरशाद उस्मानी
अनुवाद	इस्माइल चुनारा
नाटककार	राजेश सिंह
सह निर्देशक	राम गोपाल बजाज
निर्देशक	

On Stage

Chorus-1	Madhavi Sharma
Chorus-2	Potshangbam Rita Devi
Chorus-3	Shivani Bhartiya
Chorus-4	Shilpa Bharti
Chorus-5	Sugandha Pandey / Pooja Gupta
Queys/Majnun	Anant Sharma
Laila	Madhurima Tarafder
Laila's Father	Vikash Gupta / Ashwin Verma
Laila's Mother	Pooja Gupta / Sugandha Pandey
Sayyid	Suman Kumar
Ibne Salem	Bikram Lepcha
Naufel	Mazibur Rehman
Amir	Shiv Prasad Gaur / Ankur Singh
Sabir	Ajay Kumar/Saurabh Gurudas Meshram
Sipahi	Bipin Ghobale , Dheeraj Kumar, Hira Lal Roy, Ram Gopal Bajaj

Acknowledgements

Abida Praveen
Sabari Brothers
Shabdaakar (Delhi)
Little Thespian (Kolkatta)
Shantanu Deora
Gazala Amin
Mystic Music

Off Stage

Lighting Design	Avatar Sahani
Asst.	Susheel Kant Mishra
Lighting Execution	Suleman, Sunil, Sheetal
Set	Aditee Biswas
Set Execution	Vikram, Taqmir, Rizwan
Costumes Design	Amba Sanyal
Costumes Associate	Durga Sharma
Costumes in-charge	Parvati Bisht
Costumes Execution	Abhimanyu Kumar, Satyender, Hira Lal Roy
Sound Design	Rajesh Singh
Sound Mixing, Asst. in Design	Santosh Kumar Singh 'Sandy'
Sound Engineer	Satish K
Sound Execution	Mukesh Kumar, Navin Singh Thakur
Sound Execution	Mukesh Kumar, Sunil Singh
Props. Execution & In-charge	Motilal Khare
Poster	Ali Raza, Mazibur Rehman
Brochure Design	Himanshu B Joshi
Brochure Photographs	Kumud Ranjan
Backstage Assistance	All Repertory Artist
Photography	Deepak Kumar, Piyush Shrivastav, Sachin Kumar
Publicity	E. Gajlaxmi, Prakash Jha, Surendra
Exhibition	Rajbal, Pawan Kumar
Wig Design & Material	Uma Jhunjhunwala
Makeup	Hira Lal Roy, Bipin Ghobale, Shiv Prasad Gaur
Rep. Admin	Zuber Bedi , Aditya Verma, Pawan Kumar, Dhanraj
Director's Assistant & Production Assist.	Ravindra Rajeshwar Singh
Asst. Director	Aditi Arya
Language & Diction Consultant	Anis Azmi
Transcription in Devanagri	Uma Jhunjhunwala, Azhar Alam
Translation	Sabir Irshad Usmani
Playwright	Ismail Choonara
Associate Director	Rajesh Singh
Direction	Ram Gopal Bajaj

राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय रंगमण्डल



इ ब्राहिम अल्काजी ने एक प्रयोग के मददेनजर वर्ष 1964–65 में राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के रंगमण्डल की स्थापना की। शुरू में इसमें सिर्फ चार अभिनेता थे। बाद में ऐसे अनेक अभिनेताओं, संगीतकारों और तकनीशियनों को लेकर इस रंगमण्डल का विस्तार हुआ, जो मुख्यतः राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के स्नातक थे। वर्ष 1964 में स्व. ओम शिवपुरी और बाद में 1977 में स्व. मनोहर सिंह प्रथम नियमित रंगमण्डल प्रमुख बने। वर्ष 1985 में मनोहर सिंह के जाने के बाद उत्तरा बावकर और सुरेखा सीकरी ने रंगमण्डल का कार्यभार सम्भाला।

कालान्तर में स्व. जे. एन. कौशल रंगमण्डल के प्रमुख के रूप में पदासीन हुए। 1988 से 1994 तक प्रो. राम गोपाल बजाज रंगमण्डल के प्रमुख रहे। उनके बाद स्व. जे.एन. कौशल ने 1994 से 1997 तक पुनः रंगमण्डल प्रमुख का कार्यभार सम्भाला। वर्ष 1999 से 2021 तक श्री सुरेश शर्मा रंगमण्डल प्रमुख के पद पर रहे। वर्तमान में श्री राजेश सिंह रंगमण्डल प्रमुख हैं।

रंगमण्डल वर्षों से विविध प्रकार की नाट्य प्रस्तुतियों का मंचन करता रहा है, जिनमें शैलीबद्ध संगीतधर्मी नाटकों के साथ-साथ यथार्थवादी समसामयिक प्रस्तुतियाँ भी शामिल हैं। इनके साथ-साथ रंगमण्डल ने विदेशी भाषाओं के नाटकों के अनुवाद और नाट्य रूपान्तरण भी प्रस्तुत किए हैं। रंगमण्डल के साथ राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त रंग-निर्देशकों ने काम किया है।

रंगमण्डल ने 1992–1993 में मोहन राकेश की 20वीं पुण्यतिथि पर उनके नाटकों का महत्वपूर्ण उत्सव आयोजित कर उन्हें श्रद्धांजलि दी। रंगमण्डल की रजत जयन्ती के अवसर पर वर्ष 1991 में रंगमण्डल की प्रस्तुतियों से सम्बन्धित छायाचित्र मंच-विन्यास, वेशभूषा, मंच सामग्री पोस्टर आदि को शामिल करते हुए 'रंगयात्रा' नामक एक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।

रंगमण्डल ने 97 नाटककारों के लगभग 187 से भी अधिक नाटक प्रस्तुत किए हैं और अब तक लगभग 95 रंग-निर्देशकों ने रंगमण्डल के साथ कार्य किया है। रंगमण्डल से सम्बद्ध अनेक अभिनेताओं ने थिएटर, सिनेमा और टेलीविजन के क्षेत्र में उल्लेखनीय काम किया है। रंगमण्डल ने पूरे भारतवर्ष के व्यापक दौरे किए हैं तथा देश से बाहर जर्मनी, पोलैण्ड, ब्रिटेन, नेपाल, मॉरिशस, बांग्लादेश एवं चीन में सफल प्रस्तुतियाँ दी हैं।

दिनांक 22 अगस्त, 2013 को रंगमण्डल ने अपनी 50वीं वर्षगाँठ के अवसर पर स्वर्ण जयन्ती कार्यक्रम का शुभारम्भ किया तथा दिनांक 22, 23 एवं 24 मार्च, 2014 को बहुत ही धूमधाम से रंगमण्डल ने पूर्व में कार्य कर चुके अपने सभी कलाकारों को आमन्त्रित किया। इस अवसर पर उन कलाकारों ने यादगार नाट्य प्रस्तुतियों के कुछ दृश्यों को व पुराने नाटकों के गीतों को प्रस्तुत किया।

आजादी के अमृत महोत्सव के मौके पर रंगमण्डल ने 'पहला सत्याग्रही' व 'खूब लड़ी मर्दानी, सुभद्रा की ज़बानी' जैसे नाटकों का देश भर में प्रदर्शन किया वहीं 'अभिज्ञान शाकुन्तलम्' और 'अन्धा युग' जैसे क्लासिक नाटक भी तैयार किये हैं।

रंगमण्डल टीम

अध्यक्ष, रानावि : श्री परेश रावल
निर्देशक, रानावि : प्रो. (डॉ.) रमेश चन्द्र गौड़
रजिस्ट्रार, रानावि : श्री प्रदीप कुमार मोहन्ती

प्रशासनिक विभाग : जुबेर बेदी, आदित्य वर्मा
तकनीकी विभाग : मो. सुलेमान, मुकेश कुमार, बिक्रम कुमार, पार्वती बिष्ट
रंगमण्डल प्रमुख : राजेश सिंह



National School of Drama Repertory Company

National School of Drama Repertory was formed in 1964-65 on an experimental basis by Sh. E. Alkazi. In the beginning, it consisted of only four actors and later expanded into a larger group of actors, musicians and technicians, mainly drawn from graduates of the National School of Drama, Delhi. In 1964, Late Shri Om Shivpuri led the Company and in 1977, Late Shri Manohar Singh became the first regular Chief of the Repertory. When Manohar Singh left the Repertory Company in 1985 for a short period, its functioning was looked after by Ms. Uttara Baokar and Ms. Surekha Sikri.

Late Shri J.N. Kaushal officiated as the Chief till 1988. He was followed by Prof. Ram Gopal Bajaj from 1989 to 1994; Shri Kaushal took over the rein one more time from 1994 to 97; Shri Suresh Sharma was the regular Chief of the Repertory Company from 1999 to 2021. Presently, Shri Rajesh Singh is the Chief of the Repertory Company.

Over the years, Repertory has produced a variety of plays ranging from stylized musical to realistic and contemporary adaptation of foreign and Indian plays. In addition, several eminent directors of national and international repute from within the country and abroad have worked with the Company.

The Repertory has performed over 187 plays by 97 playwrights and has worked with 95 directors. Quite a few of the actors of the company have emerged as celebrities in theatre, cinema and television in India. The Repertory tours extensively all over the Country and has made several successful trips to Germany, Poland, UK, Nepal, Mauritius, Bangladesh and China.

In 1993, the Company organized a major Festival of Mohan Rakesh's plays to mark his 20th death anniversary. In 1991 on the occasion of the Company's Silver Jubilee, Rang Yatra an exhibition consisting its Photographs, Set-Models, Costumes, Properties and Poster etc. was also put up.

August 22, 2013 was the Repertory Company's 50th foundation day and Golden Jubilee Celebrations were kick-started on this day. The second important event of Company's Golden Jubilee Celebrations was held from March 22 to 24, 2014, where all the ex-repertory company members were invited. On this occasion scenes and songs from memorable productions of the past were presented to the audience, in what turned out to be an extremely nostalgic evening for many people.

On the occasion of Azadi ka Amrit Mahotsav, Repertory performed plays like 'Pehla Satyagrahi' and 'Khoob Ladi Mardaani, Subhadra Ki Zabaani' across the country, while also producing classical plays like 'Abhijnan Shakuntalam' and 'Andha Yug'.

Repertory Team

Chairman, NSD : Shri Paresh Rawal

Director, NSD : Prof. (Dr.) Ramesh Chandra Gaur

Registrar, NSD : Shri Pradeep Kumar Mohanty

Administration : Zubair Bedi, Aditya Verma

Technical Persons: Md. Suleman, Mukesh Kumar, Bikram Kumar, Parvati Bisht

Repertory Chief : **Rajesh Singh**



National School of Drama Repertory Company
Bahawalpur House, Bhagwandas Road
New Delhi-110001
Ph. 011-23031105, 23031106
nsdrepertory2022@gmail.com
Website : www.nsd.gov.in



Design : Himanshu B Joshi
#9810549956